VANI
Celebrating 30 Years
VOICE OF THE VOLUNTARY SECTOR

चतुर्भुज सुरक्षा संवाद/क्वाड्रीलेटरल सिक्योरिटी डायलॉग (क्यूएसडी) या क्वाड में समाज सेवी क्षेत्र की भागीदारी का दायरा

एक अध्ययन रिपोर्ट

HEINRICH BÖLL STIFTUNG
INDIA

चतुर्भुज सुरक्षा संवाद (क्यूएसडी) या क्वाड में समाज सेवी क्षेत्र की भागीदारी का दायरा

लेखकः वॉलंटरी एक्शन नेटवर्क इंडिया (वाणी)

सितंबर 2022

कॉपीराइट (सी) वॉलंटरी एक्शन नेटवर्क इंडिया
प्रकाशक की स्वीकृति के साथ इस अध्यन रिपोर्ट की विषय सामग्री को संपूर्ण या भागों में पुनः प्रस्तुत किया जा सकता है।

प्रकाशनः
वॉलंटरी एक्शन नेटवर्क इंडिया (वाणी)
वाणी हाउस, 7, पीएसपी पॉकेट,
सेक्टर –8, द्वारका, नई दिल्ली –110 077
फोनः 91-11-49148610, 40391661, 40391663
ईमेलः info@vaniindia.org
वेबसाइटः www.vaniindia.org

@TeamVANI

@vani_info

@VANI India

@VANI Perspective

डिज़ाइन : **शेड्स**

प्रस्तावना

क्वाड या क्यूएसडी, अमेरिका, जापान, भारत और ऑस्ट्रेलिया से मिलकर एक बहुपक्षीय समूह, ''सुनामी कोर ग्रुप'' के रूप में शुरू हुआ था, जिसे 2004 में आई घातक सूनामी के जवाब में तात्कालिक बनाया गया था। इसके अतिरिक्त, यह समूह आपदा के दौरान बचाये गए लोगों को आपदा राहत और मानवीय सहायता जुटाने और समन्वय करने के उद्देश्य से इन चारो राष्ट्रों में एक मंच के रूप में स्थापित किया गया। धीरे–धीरे, इस समूह ने अपनी रणनीतिक भूमिका और साझेदारी के कारण लोकप्रियता और प्रासंगिकता प्राप्त की।

क्वाड राष्ट्रों की कुल जनसंख्या 1.8 बिलियन है, और वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में +30 ट्रिलियन से अधिक का योगदान है। क्वाड भागीदारों ने संरचना विकास में +48 बिलियन से अधिक का निवेश किया है। 24 सितंबर, 2022 को आयोजित क्वाड शिखर सम्मेलन के दौरान, जी–7 की बिल्ड बैक बेटर वर्ल्ड (बी3डब्ल्यू) की घोशणा पर डिजिटल कनेक्टिविटी, जलवायु, स्वास्थ्य तथा स्वास्थ्य सुरक्षा, लैंगिक समानता पर आधारित एक निर्माण साझेदारी के लिए प्रतिबद्धता ली गई दृ जो क्वाड क्षेत्र में चल रही संरचना पहल को मजबूत करने के लिए विशेषज्ञता, क्षमता और प्रभाव का संगठन किया गया और उन क्षेत्रों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए नए अवसरों की पहचान की गई (एमईए)। कोविड –19 महामारी ने रोजगार से लेकर निवेश तक सभी क्षेत्रों में क्वाड देशों सहित वैश्विक अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाया है। इस प्रकार यह समूह अधिकतम स्वतंत्रता और सहयोग के साथ अपने आर्थिक संबंधों को मजबूत करके महामारी के प्रभाव से तेजी से उबरने की सुविधा प्रदान करेगा। इसलिए, क्वाड देशों के साथ निवेश और सहयोग बढ़ाने के कई कारण हैं।

एक प्रतिशिठत मंच होने के नाते, वैश्विक स्वास्थ्य, अंतर्राष्ट्रीय संरचना, जलवायु परिवर्तन, डिजिटलीकरण, शिक्षा एवं ज्ञान के विकास, साइबर सुरक्षा तथा अंतरिक्ष से संबंधित चुनौतियों के लिए डिवाइस स्ट्रेटेजिक सोल्युषन (उपकरण रणनीतिक समाधानों) में संलग्न होने के कारण, क्वाड राष्ट्रों के समाज सेवी क्षेत्र इस मंच का एक अभिन्न हिस्सा माने जाते है। इसलिए, क्वाड के साथ समाज सेवी क्षेत्रों की संलग्नता के दायरो का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

मैं इस रिपोर्ट को पूरा करने में एचबीएफ द्वारा दिए गए सहयोग के लिए उनका आभार प्रकट करना चाहता हूं और डॉ. पल्लवी रेखी, कार्यक्रम कार्यालय, वाणी को इस रिपोर्ट पर शोध करने और इसके निर्माण के लिए धन्यवाद देता हूं।

साभार,
हर्ष जेटली,
सीईओ, वाणी

लघुरूप

क्यूएसडी (QSD)– क्वाड्रीलेटरल सिक्योरिटी डायलॉग

यूएसए (USA) – यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका

ऐसिअन (ASEAN)– एसोसिएषन ऑफ साउथ ईस्ट एषियन नेषंस

जीएसओएमआईए (GSOMIA) – जनरल सिक्योरिटी ऑफ मिलिट्री इनफार्मेशन एग्रीमेंट

लेमोआ (LEMOA) – लोजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट

कॉमकासा (COMCASA) – कम्युनिकेषन्स कम्पेटिबिलिटी एंड सिक्योरिटी एग्रीमेंट

बेका (BECA) – बेसिक एक्सचेंज एंड कोऑपरेशन एग्रीमेंट

आईएएफ (IAF) – इंडियन एयर फोर्स

ब्रिक्स (BRICS)– ब्राजील, रषिया, इंडिया, चाइना एंड साउथ अफ्रीका

बीआरआई (BRI)– बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव

ओकस (AUKUS)– ऑस्ट्रेलिया, यूनाइटेड किंगडम एंड यूनाइटेड स्टेट्स

एसीएससी (ACSC)– ऐसिअन सिविल सोसाइटी कांफ्रेंस

पीएफ (PF)– ऐसिअन पीपलस फोरम

एसडीजी (SDG)– सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स

विषय–सूची

परिचय 6

क्वाड क्या है? 6

इतिहास 6

क्वाड के सिद्धांत 7

2021 में पहला इन–पर्सन क्वाड समिट/
2021 में पहला व्यक्तिगत क्वाड सम्मेलन 7

भारत के लिए क्वाड का महत्व 10

क्या क्वाड भारत के लिए अच्छा है? 12

क्वाड के समान पिछले समूहों के साथ
समाज सेवी क्षेत्र का अनुभव 13

ऐसिअन (एसोसिएशन ऑफ साउथ–ईस्ट एशियन नेशंस) 14

निष्कर्ष 15

समाज सेवी क्षेत्र की सलग्नता का दायरा 16

संदर्भः 17

परिचय

क्वाड क्या है?

'क्वाड्रीलेटरल सिक्योरिटी डायलॉग' (क्यूएसडी) के नाम से प्रसिद्ध, क्वाड एक अनौपचारिक रणनीतिक मंच है जिसमें चार राष्ट्र सम्मिलित हैं – अमेरिका (यूएसए), भारत, ऑस्ट्रेलिया और जापान। क्वाड के प्राथमिक उद्देश्यों में से एक स्वतंत्र, समृद्ध और समावेशी इंडो–पैसिफिक क्षेत्र के लिए काम करना है।

2004 के हिंद महासागर सूनामी के बाद क्वाड एक मुक्त साझेदारी के रूप में शुरू हुआ, जब चारो देश मानवीय और आपदा सहायता प्रदान करने के लिए एक साथ आए। यह समूह पहली बार 2007 में दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संगठन (ऐसिअन) के मौके पर मिला था। इसे समुद्री लोकतंत्र का एक गठबंधन माना जाता है, और सभी सदस्य देशों की बैठकों, अर्ध–नियमित शिखर सम्मेलनों, सूचनाओं के आदान–प्रदान और सैन्य अभ्यास द्वारा मंच का संचालन किया जाता है।(1)

इतिहास

2007 में अपनी पहली वरिष्ठ आधिकारिक स्तर की बैठक के बाद से जापान, अमेरिका, भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच क्वाड में क्षेत्रीय सुरक्षा मुद्दों पर चर्चा करने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों की एक बैठक और एकल नौसैनिक अभ्यास का संचालन किया गया। 2004 के बॉक्सिंग डे सूनामी की संयुक्त प्रतिक्रिया के रूप में चारो देशों ने पहली बार एक ''कोर ग्रुप'' का गठन किया। इस सहयोग ने क्वाड की प्रथम यात्रा का आधार प्रदान कियाय 2008 में अलग होने से पहले 2007 में इनकी एक संक्षिप्त बैठक हुई। हालांकि, इसके बाद के आठ वर्षों की अस्थिरता ने चारो राज्यों के बीच बढ़ती विदेश नीति संगम द्वारा इस क्षेत्र का नेतृत्व किया, जिसके द्वारा एक स्वतंत्र एवं मुक्त इंडो–पैसिफिक क्षेत्र बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया और आतंकवाद विरोधी तथा नियमित तंत्र को बढ़ाने के लिए संयुक्त रूप से कार्यवाही की गयी। परिणामस्वरूप, 2017 में क्वाड का फिर से गठन किया गया और द्विमासिक बैठके संचालित की गई। आरम्भ से ही, क्वाड की वैचारिक और भौगोलिक नींव की संरचना जापानी प्रधान मंत्री शिंजो आबे ने की थी, उनके ''कोन्फ्लुएन्स ऑफ दी टू सीज'' भाषण ने इस समूह के लिए नींव रखी। वास्तव में, इस वैचारिक और भौगोलिक सीमा ने स्वाभाविक रूप से क्वाड के इरादे और उसके भविष्य के बारे में विपरीत अनुमानों को जन्म दिया – जैसे यह एक ''एशियाई नाटो'' की उत्पत्ति है, यह चीन के उदय को बढ़ावा देने के लिए एक नेटवर्क है, अथवा यह एक आसमान समूहीकरण है जो रणनीतिक दृष्टिकोण के पीछे कभी एकजुट नहीं होगा।(2)

क्वाड के सिद्धांत

क्वाड के कुछ सिद्धांत और प्रतिबद्धताएं हैं जिन्हें प्राप्त करना इसका लक्ष्य है। उनका संक्षेप में उल्लेख नीचे किया गया है:

1) यह एक ऐसे क्षेत्र के लिए प्रयास करता है जो स्वतंत्र, समावेशी, स्वस्थ, लोकतांत्रिक मूल्यों से जुड़ा हो और बंधनो से मुक्त हो।

2) यह एक स्वतंत्र एवं नियमित व्यवस्था क्रम को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है, जो सुरक्षा और समृद्धि वृद्धि के लिए दोनों अंतरराष्ट्रीय कानून और इंडो पैसिफिक तथा उसके बाहर की चुनौतियों /संकटो का मुकाबला करने के लिए प्रतिबद्ध है। यह कानून प्रषासन, नेविगेषन और ओवरफ्लाइट की स्वतंत्रता, विवादों का शांतिपूर्ण समाधान, लोकतांत्रिक मूल्यों और क्षेत्रीय अखंडता का समर्थन करते हैं।

3) कोविड –19 के आर्थिक और स्वास्थ्य प्रभावों, जलवायु परिवर्तन, साइबर स्पेस, समुद्री डोमेन, महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों, आतंकवाद, उत्तम संरचना में निवेश, मानवीय–सहायता तथा आपदा–राहत जैसी साझा चुनौतियों का समाधान करने की प्रतिज्ञा करते है।

4) आर्थिक सुधार में तेजी लाने और वैश्विक स्वास्थ्य को लाभ पहुंचाने के लिए सुरक्षित, किफायती और प्रभावी वैक्सीन उत्पादन और उस तक समान पहुंच का विस्तार करने के लिए क्षेत्र में डटे रहेंगे। (3)

2021 में पहला इन–पर्सन क्वाड समिट /2021 में पहला व्यक्तिगत क्वाड सम्मलेन

मार्च 2021 में, क्वाड के पहले और सबसे महत्वपूर्ण शिखर सम्मेलन की मेजबानी अमेरिका के राष्ट्रपति जो बिडेन ने वर्चुअल (आभासी) रूप में की। जिसमे ऐसे इंडो पैसिफिक क्षेत्र के लिए प्रयास करने की शपथ ली गई, जो स्वतंत्र, अप्रतिबंधित, समावेशी और लोकतांत्रिक मूल्यों से जुड़ा हो, इसके द्वारा चीन को एक स्पष्ट संदेश दिया गया।

शिखर सम्मेलन के दौरान नेताओं ने अंतर–देशीय साझेदारी को मजबूत करने और दुनिया की सबसे बड़ी चुनौतियों पर सहयोग बढ़ाने के लिए प्रगतिशील पहल के प्रस्ताव रखे: जैसे कोविड –19 महामारी से मजबूती से मुकाबला करना, टीकों का सरल, सुरक्षित और पर्याप्त उत्पादन तथा उन तक पहुंच सुनिश्चित करना, संरचना का विकास, जलवायु परिवर्तन के खतरनाक परिणामों के समाधान, नई और उभरती हुई प्रौद्योगिकी के उपयोग को प्रोत्साहित करना और सुरक्षित भविष्य के लिए सभी सदस्य देशों में युवाओं का विकास करना आदि।

वैश्विक स्वास्थ्यः

- स्वास्थ्य क्षेत्र के अंतर्गत, सदस्य देशों के नेताओं ने वैक्सीन के निर्माण का विस्तार, टीकों के उत्पादन के लिए वित्तपोषण, एक देश से दूसरे देश में वैक्सीन की पहुंच को बढ़ावा देने पर सहमति व्यक्त की।

- टीके तथा दवाओं सहित, कोविड–19 से संबंधित स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में महत्वपूर्ण निवेश बढ़ाना।

- सदस्य देशों को भविष्य की किसी भी महामारी से निपटने के लिए बेहतर योजनाओं और साधनों के साथ तैयार करना, वर्तमान और भविष्य में सुरक्षित और प्रभावी टीके, चिकित्सीय और निदान सेवा उपलब्ध कराने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग को और मजबूत करना।

संरचनाः

- क्वाड ने संरचना निर्माण पर अपना ध्यान केंद्रित किया है जो डिजिटल कनेक्टिविटी, जलवायु परिवर्तनशीलता, स्वास्थ्य और स्वास्थ्य सुरक्षा एवं लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है। इस संदर्भ में, क्वाड इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में संरचना को मजबूत और बेहतर बनाने के लिए विशेषज्ञों और आवश्यक क्षमता में निवेश करने पर सहमत हुआ है।
- सदस्य देशों के निर्माण विशेषज्ञों के साथ एक क्वाड इंफ्रास्ट्रक्चर कोऑर्डिनेशन ग्रुप (संरचना समन्वय समूह) का गठन किया गया जो नियमित रूप से आवश्यकताओं को साझा करेगा, उन्हें पूरा करेगा और पारदर्शिता तथा बेहतर संरचना निर्माण सुनिश्चित करेगा।

जलवायु परिवर्तनः

क्वाड देश 2030 एसडीजी एजेंडे के अनुसार प्रयासों को लागू करने और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, जीवाश्म ईंधन की चरणबद्ध तरीके से समाप्ति करने और नवीकरणीय ऊर्जा स्थानांतरण आदि के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है।

- क्वाड शिपिंग टास्क फोर्स लॉन्च करके और इस दिशा में प्रयास सुनिश्चित करके 2030 तक शून्य–उत्सर्जन शिपिंग कॉरिडोर तैयार किया जायेगा ।

- प्रौद्योगिकी विकास द्वारा स्वच्छ–हाइड्रोजन साझेदारी स्थापित करना और स्वच्छ उत्पादन को कुशलतापूर्वक बढ़ाना, अंतिम उपयोग अनुप्रयोगों के लिए सुरक्षित और कुशल परिवहन, भंडारण और स्वच्छ हाइड्रोजन का वितरण करने के लिए वितरण तंत्र का विकास और इंडो पैसिफिक क्षेत्र में स्वच्छ हाइड्रोजन व्यापार में तेजी लाने के लिए बाजार में मांग को बढ़ाना !

- इंडो पैसिफिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण जलवायु सूचना–साझाकरण और आपदा–प्रतिरोधी संरचना को बढ़ावा देकर जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूल और परिवर्तशील तैयारी को मजबूत करना।

युवाओं को बढ़ावा देना:

क्वाड देश आज के युवाओं पर अपनी ऊर्जा केंद्रित करने के लिए प्रतिबद्ध है क्योंकि वे देश का भविष्य है और कल के नेता, नवप्रवर्तक और अग्रणी होंगे।

- क्वाड फैलोशिप को क्वाड सदस्यों द्वारा लॉन्च किया गया, जिसका लक्ष्य एक वर्ष में 100 और प्रत्येक क्वाड देश से 25 छात्रो की स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट की डिग्री प्रायोजित करना। इस फैलोशिप की देखरेख के लिए गैर–सरकारी क्षेत्र, निजी क्षेत्र और शिक्षाविदों के नेताओं सहित एक कार्यबल का गठन किया जाएगा।

उभरती तकनीक/ प्रौद्योगिकी:

क्वाड लीडर्स एक ऐसा तकनीकी पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए प्रतिबद्ध है जो मुफ्त, सुलभ और सुरक्षित हो।

- क्वाड एक जिम्मेदार, स्वतंत्र, उच्च–मानक नवाचार प्रौद्योगिकी डिजाइन, विकास, संचालन और उपयोग के सिद्धांतों का एक ब्यौरा प्रस्तुत /लॉन्च करेगा।

- क्वाड मानक–विकास गतिविधियों के साथ–साथ पूर्व–निर्धारित मानक अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करते हुए संपर्क समूह स्थापित करेगा।

- क्वाड पार्टनर्स क्षमता का मानचित्रण, कमजोरियों की पहचान और सेमीकंडक्टर (अर्धचालक) और उनके महत्वपूर्ण घटकों के लिए आपूर्ति–श्रृंखला (सप्लाई चेन) सुरक्षा को मजबूत करने के लिए एक संयुक्त पहल करेंगे।

- क्वाड पार्टनर संयुक्त रूप से परीक्षण और परीक्षण सुविधाओं से संबंधित प्रयासों और 5G विविधीकरण के लिए सक्षम वातावरण की सुविधा प्रदान करेंगे।

- क्वाड सिंथेटिक बायोलॉजी, जीनोम सीक्वेंसिंग और बायोमैन्युफैक्चरिंग सहित बेहतर बायोटेक्नोलॉजीज से लेकर महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों में रुझानों का निरिक्षण करेगा।

साइबर सुरक्षा:

क्वाड घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साइबर खतरों के लिए लचीला तंत्र विकसित करने एवं राष्ट्रों की सयुंक्त विशेषज्ञता से सर्वोत्तम प्रथाओं के संचालन का प्रयास करेगा।

- एक क्वाड सीनियर साइबर–ग्रुप का गठन किया जाएगा, जिसमें चारो देशों के साइबर सुरक्षा नेता मिलेंगे और साझा साइबर मानकों को अपनाने और लागू करने तथा सुरक्षा सॉफ्टवेयर के विकास पर चर्चा करेंगेय कार्यबल और प्रतिभा का निर्माणय और सुरक्षित तथा भरोसेमंद डिजिटल तंत्र एवं साइबर सुरक्षा को बढ़ावा दिया जायेगा ।

अंतरिक्षः

उपग्रह डेटा का आदान–प्रदान करने, जलवायु परिवर्तन का निरीक्षण और अनुकूलन, आपदा तैयारियों को बढ़ाने और साझा डोमेन में चुनौतियों का सामना करने के लिए अंतरिक्ष सहयोग का एक नया कार्य समूह बनाया जाएगा।

- क्वाड जलवायु परिवर्तन संकटो और महासागरों एवं समुद्री संसाधनों के दीर्घकालीन उपयोग के लिए पृथ्वी अवलोकन उपग्रह डेटा और विश्लेषण के आदान–प्रदान के लिए विचार विमर्श करेगा।
- क्वाड देश आपसी हित प्रौद्योगिकियों का विस्तार करने के लिए इंडो पैसिफिक क्षेत्र में अंतरिक्ष संबंधित डोमेन में अन्य देशों की क्षमता बढ़ाने का कार्य करेंगे।
- क्वाड बाहरी अंतरिक्ष पर्यावरण की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए मानदंडों, दिशानिर्देशों, सिद्धांतों और नियमों पर भी विचार विमर्श करेगा। (4)

भारत के लिए क्वाड का महत्व

लोकप्रिय धारणा के अनुसार, क्वाड का गठन चीन के आर्थिक और सैन्य उदय का मुकाबला करने के लिए किया गया था। ऐसे में भारत और चीन की सेनाओं के बीच सीमा पर तनाव बढ़ने की स्थिति में अन्य क्वाड देशों से मदद लेना भारत के लिए फायदेमंद होगा। इसके अलावा, भारत अपने नौसैनिक मोर्चे की मदद भी ले सकता है और इंडो पैसिफिक /हिंद–प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक खोज कर सकता है।

हालाँकि, क्वाड न केवल चीन विस्तार का विद्रोह करने के उद्देश्य की पूर्ति कर सकता है, बल्कि जिस आक्रामकता और दबाव के साथ चीन अपनी बात रखता है, वह निश्चित रूप से क्वाड सदस्यों के बीच चर्चा का एक लोकप्रिय विषय है।

अन्य क्वाड देशों की सहायता और सहयोग से, भारत के पास कई उपक्रमों का पता लगाने का एक शानदार अवसर है, जिसका उद्देश्य ऐसा इंडो–पैसिफिक क्षेत्र बनाना है जो स्वतंत्र और मुक्त हो। इसके अलावा, भारत की भौगोलिक स्थिति ऐसी है, जो इसे इंडो पैसिफिक क्षेत्र में केंद्रीय रूप से स्थित बनाती है, जिससे इसका इंडो पैसिफिक तटरेखाओं के साथ व्यापक व्यापार और सांस्कृतिक संबंध हैं।[5]

इंडो–पैसिफिक संरचनात्मक निर्माण नई दिल्ली को पूर्वी एशिया में अपने हितों को आगे बढ़ाने की स्थिति में लाता है। भारत अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे शक्तिशाली सहयोगियों के समूह में शामिल होकर, इंडो पैसिफिक क्षेत्र और उससे आगे के अन्य देशों में अपनी शक्ति और कद को आगे बढ़ा सकता है। इस साझेदारी में अन्य समकक्षों की तुलना में भारत का कम विकसित होना इसे और भी अधिक शक्तिशाली बनाता है और इसे अपनी मध्य–शक्ति की स्थिति से ऊपर उठाता है।

इसके अलावा, इंडो पैसिफिक क्षेत्र में नई दिल्ली की बढ़ती उपस्थिति भारत की एक्ट ईस्ट नीति और एक्सटेंडेड नेबरहुड (विस्तारित पड़ोस) पॉलिसी /नीति को स्वचालित रूप से मजबूत करती है। इस बढ़ोतरी को ऐसिअन के सदस्यों सहित नई दिल्ली का भी सहयोग प्राप्त है।

भारत और अमेरिका के बीच मजबूत होते संबंध भी प्रतिद्वंद्वी देशों के खिलाफ रक्षा के संदर्भ में आवश्यक प्रभाव बनाते हैं। यह नई दिल्ली और वाशिंगटन के बीच बढ़ती संबंद्धता का उदाहरण है, जैसा कि दोनों देशों के बीच हस्ताक्षरित चार समझौतों में उल्लेख किया गया है, जिसमें जनरल सिक्योरिटी ऑफ मिलिट्री इनफार्मेशन एग्रीमेंट (जीएसओएमआईए, 2002); लोजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (लेमोआ, 2016); और कम्युनिकेषन्स कम्पेटिबिलिटी एंड सिक्योरिटी एग्रीमेंट (कॉमकासा, 2018); तथा बेसिक एक्सचेंज एंड कोऑपरेशन एग्रीमेंट (बेका, 2020) – दोनों सेनाओं के बीच पारस्परिकता को बढ़ावा देना और उच्च प्रौद्योगिकी की बिक्री और हस्तांतरण के लिए प्रावधान करना। इसके अतिरिक्त, दोनों देशों के बीच इस बढ़ती मित्रता के कारण, अमेरिका ने भारत को हथियारों का निर्यात शून्य से बढ़ाकर लगभग 15 बिलियन अमरीकी डालर कर दिया है।

2020 में भारत–ऑस्ट्रेलिया व्यापक रणनीतिक साझेदारी के बाद, इंडो–पैसिफिक और क्वाड में भारत की भूमिका को और भी बढ़ावा मिला। इसके अतिरिक्त, कैनबरा और नई दिल्ली ने नौ व्यवस्थाओं पर हस्ताक्षर किए, इनमें से प्रमुख ऑस्ट्रेलिया–भारत म्यूचुअल लॉजिस्टिक्स सपोर्ट अरेंजमेंट और डिफेंस साइंस एंड टेक्नोलॉजी इंप्लीमेंटिंग अरेंजमेंट है, जो दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग को गहरा करने के लिए एक तंत्र प्रदान करता है।

भारत अपने पड़ोसी देशों जैसे मालदीव, मॉरीशस, श्रीलंका और सेषेल्स को चिकित्सा सहायता प्रदान करने वाले प्राथमिक देशों में से एक था। इसके अतिरिक्त, कोविड–19 से बुरी तरह प्रभावित ईरान और इटली को मदद मुहैया कराने वालों में नई दिल्ली भी शामिल है। भारत ने महामारी से निपटने और उसे घटाने के लिए अन्य देशों को तात्कालिक प्रतिक्रिया समूह भी प्रदान किए। इसके अतिरिक्त, भारत ने कोरोनोवायरस के केंद्र चीन के वुहान से नौ मालदीव के नागरिकों को निकाला।

वैश्विक प्रतिक्रिया के साथ–साथ महामारी से निपटने में भी भारत सबसे आगे था। नई दिल्ली ने भारत से प्रारंभिक 10 मिलियन अमरीकी डालर के योगदान के साथ, कोविड –19 के लिए एक सार्क आपातकालीन प्रतिक्रिया कोश की स्थापना की। इसके अतिरिक्त, भारत के सषस्त्र बल विदेशों में भारत के मिषन को आगे बढ़ाने में सक्रिय रूप से लगे हुए हैं। फरवरी में, एक भारतीय वायु सेना (आईएएफ) राहत विमान ने वुहान से 76 भारतीयों और 36 विदेशी नागरिकों को निकाला। भारतीय सेना के सहयोग से, आईएएफ ने मालदीव को 6.2 टन आवश्यक दवाएं और अस्पताल उपभोग्य वस्तुएं पहुंचाने के लिए 18 घंटे का ऑपरेशन संजीवनी लॉन्च किया, और भारतीय नौसेना का युद्धपोत आईएनएस खत्री (5,600 टन लैंडिंग जहाज) मिषन सागर के अंतर्गत नियोजित किया गया। मालदीव, मॉरीशस, मेडागास्कर, कोमोरोस और सेषेल्स को चिकित्सा समूह, आवश्यक दवाओं की खेप और खाद्य आपूर्ति प्रदान की गई।

भारत के महामारी से निपटने में सहयोग के अतिरिक्त, इसे चीन के बाद निवेश के लिए सबसे उपयुक्त देशो में से एक माना जाता है। चीन के साथ हाल की अषांति के बाद, कई निवेशक चीन से निकलने और किसी अन्य जगह निवेश करने के अवसरों की तलाष कर रहे हैं। भारत उनके लिए एक पसंदीदा विकल्प हो सकता है इसके विशाल बाजार और सस्ती श्रम लागत के कारण । यह भविष्य में वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला प्रणाली में भारत की भूमिका को जोड़ता है।

यह तर्क इंडो पैसिफिक क्षेत्र को आगे बढ़ाने के प्रमुख दावेदार के रूप में भारत की उभरती भूमिका को सुनिश्चित करता है। भूत और वर्तमान में इस तरह की महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ, भारत पहले से ही अपने कंधों पर एक बड़ी और अधिक सार्थक जिम्मेदारी ले चुका है। महामारी के बाद की दुनिया में भारत को मजबूती से इंडो पैसिफिक नीतियों और संबद्ध हितों की रक्षा करने में अग्रणी माना जाता है। (6)

क्या क्वाड भारत के लिए अच्छा है?

अन्य विकसित देशों के साथ क्वाड का सदस्य होना भारत के लिए फायदेमंद और चुनौतीपूर्ण दोनों है। जैसा कि पहले ही चर्चा की जा चुकी है, क्वाड निश्चित रूप से इंडो पैसिफिक क्षेत्र में चीन की वृद्धि का प्रतिकार करने में भारत की मदद कर सकता है। विश्व की प्रमुख शक्तियों के सहयोग से, भारत भी अपनी वर्तमान स्थिति से ऊपर उठ सकता है और इंडो पैसिफिक क्षेत्र तथा उसके आगे भी प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। इसके अलावा, भारत की एक्ट ईस्ट नीति और एक्सपैंडेड नेबरहुड पॉलिसी ने इंडो पैसिफिक क्षेत्र में भारत की भागीदारी को बढ़ावा दिया है।

जैसा कि उल्लेख किया गया है, क्वाड देशों का मेल मिलाप भी भारत को निवेश के लिए निवेशकों का पसंदीदा स्थान बना सकता है। सूचनाओं का आदान–प्रदान, पारस्परिक रूप से लाभकारी समझौतों पर हस्ताक्षर, रक्षा संबंधी समझौते भारत के लिए अनुकूल स्थिति बनाते है और इन देशों के बीच संबंधों को मजबूत करते है। विशेष रूप से, महामारी के बाद की दुनिया में, क्वाड को भारत के लिए अपने नेतृत्व का दावा करने और खुद को फार्मास्युटिकल मेस्ट्रो के रूप में साबित करने के महान अवसर के रूप में देखा जा सकता है। महामारी के दौरान भी, भारत को दुनिया भर में कोविड –19 टीकाकरण प्रदान करने के प्रयास करते देखा गया।

हालाँकि, जिस तरह हर घटना के अपने फायदे और नुकसान होते हैं, उसी तरह क्वाड भारत के लिए अपने फायदों के अलावा कुछ चुनौतियां भी पेष करता है। जैसा कि क्वाड चीन को एक महाशक्ति के रूप में दबाने के प्रयास के रूप में दिखाई देता है, इससे दोनों देशों के बीच तनाव पैदा हो सकता है। इसलिए, भारत के लिए यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि वह क्वाड की भूमिका को केवल चीन के खिलाफ साझेदारी तक सीमित न करे। इसके अलावा, यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत और चीन दोनों ब्रिक्स जैसे अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों का हिस्सा हैं। इसलिए, क्वाड स्पेस में भारत की हर कार्रवाई ऐसे अन्य समूहों के साथ उसकी उपस्थिति भी तय करेगी।

इसके अलावा, भारत अपनी अधिकांश ऊर्जा और व्यापार आवश्यकताओं के लिए ईरान और म्यांमार जैसे अन्य देशों पर भी निर्भर है। दिलचस्प बात यह है कि चीन इन राज्यों में अपने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के माध्यम से भी सर्वोच्च रूप से सक्रिय है। इस परस्पर व्यापकता (ओवरलैपिंग) के कारण ईरान और म्यांमार भारत से दूर हो सकते हैं। इसके अलावा, यदि भारत सैन्य मोर्चे पर क्वाड में शामिल होता है, तो यह भारत के लिए अन्य क्वाड देशों की तुलना में अधिक खतरनाक हो सकता है, यह देखते हुए कि भारत चीन के साथ अपनी सीमा साझा करता है और यह चीन को प्रतिघात करने का सीधा मौका देता है।

अंत में, अपने निकटतम पड़ोसियों को संपर्क/कनेक्टिविटी और सुरक्षा प्रदान करने के अपने वादों को पूरा करने में भारत की विफलता ने इंडो पैसिफिक क्षेत्र के लिए बड़ी चिंता पैदा कर दी है। इसके अलावा, भारत के कुछ पड़ोसी पहले से ही अपने क्षेत्रों में चीन के पदचिह्नों का अनुभव कर रहे हैं, जिसने उन क्षेत्रों में भारत के प्रभुत्व को और कम कर दिया है। यदि यह जारी रहता है और भारत स्थिति पर नियंत्रण नहीं रखता है, तो भविष्य में क्वाड परियोजनाओं को पूरा करना भी विफल हो सकता है, क्योंकि भारत अपने वादों को पूरा करने में असमर्थ है। (7)

क्वाड के समान पिछले समूहों के साथ समाज सेवी क्षेत्र का अनुभव

भारत, अमेरिका, जापान और चीन जैसी बड़ी एवं शक्तिशाली अर्थव्यवस्थाओं के कारण इंडो पैसिफिक क्षेत्र वैश्विक व्यापारियों के लिए निवेश हेतु सबसे उत्तम स्थान के रूप में उभरा है। हालाँकि, अमेरिका और चीन के बीच व्यापार युद्ध और चीन पर अन्य देशों की बढ़ती निर्भरता ने इन बहुपक्षीय मंचों के दायरे सीमित होने की अटकलों को जन्म दिया है। इसने इन देशों को इंडो पैसिफिक क्षेत्र में अपना प्रभुत्व बनाए रखने के लिए विकल्प खोजने के लिए उतप्रेरित किया है। अपने सैन्य स्थान बदलने और उसे आधुनिक बनाने के चीन के प्रयास से सीमा पार भारी सैन्यीकरण हुआ है, जिसने अर्थव्यवस्थाओं के शक्ति वितरण के वर्तमान संतुलन को बिगाड़ दिया है।

परिणामस्वरूप, चीन के विकास को रोकने और सुरक्षा चिंताओं को दूर करने के लिए, इंडो–पैसिफिक क्षेत्र के अन्य देश क्वाड और औकस (ऑस्ट्रेलिया, यूनाइटेड किंगडम और अमेरिका) जैसे कई अनौपचारिक समूह बना रहे हैं। हालाँकि, औकस अपेक्षाकृत नया और विकासषील है, इन्ही चिंताओं को दूर करने के लिए पहले भी इसी तरह के बहुपक्षीय मंच बने हैं– उनमें से एक है ऐसिअन।

ऐसिअन (एसोसिएशन ऑफ साउथ–ईस्ट एशियन नेशंस)

ऐसिअन की स्थापना अगस्त 1967 में दक्षिण–पूर्व एशियाई क्षेत्र में आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति और सांस्कृतिक विकास में तेजी लाने और क्षेत्रीय शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी।

ऐसिअन सिविल सोसाइटी कांफ्रेंस/ ऐसिअन पीपुल्स फोरम (एसीएससीध्एपीएफ) की एक रिपोर्ट में पाया गया कि 2005 से 2015 के बीच, ऐसिअन के साथ समाज सेवी क्षेत्र की भागीदारी और संलग्नता का सभी ऐसिअन सदस्य देशों द्वारा लगातार विरोध किया गया था। दस्तावेजों में पाया गया कि इस समयावधि के दौरान समाज सेवी क्षेत्र द्वारा दिए गए सुझावों पर ऐसिअन सदस्यों की प्रतिक्रिया बहुत खराब थी।

रिपोर्ट कुछ मुद्दों के साथ समाप्त हुई जिसे सीएसओ (स्वयं सेवी संस्थानों) ने ऐसिअन के साथ कार्य के संबंध में उजागर किया था। उनमें से कुछ इस प्रकार हैः

(1) ऐसिअन निर्णयो में भागीदारी की कमीय (2) सदस्य देशों और उनके बीच बढ़ती असमानताय (3) कमजोर लोकतंत्र और सत्तावादी शासन पद्धतियों की व्यापकताय (4) मानव अधिकारों की कमी और कुशासन के विरुद्ध प्रतिबंधों का अभावय (5) विशिष्ट–केंद्र विकास रणनीति का प्रभुत्व और परिणामस्वरूप समावेशी विकास में विफलताय (6) व्यापार और निवेश संबंधों में सहयोग की बजाय प्रतिस्पर्धाय (7) एक क्षेत्रीय पहचान और एकता की कमीय (8) सभी सदस्यों और प्रवासियों के लिए कमजोर सामाजिक सुरक्षाय और (9) लिंग असमानता। (8)

(2) एक अन्य अध्यन ने यह उजागर किया कि ऐसिअन सरकारें उन देशो के समाज सेवी क्षेत्रों की तुलना में निजी क्षेत्र, शैक्षणिक संस्थानों और अनुसंधान विशेषज्ञ कमेटियों के साथ अधिक सहज महसूस करती थी।

”ऐसिअन और इसकी सदस्य सरकारों को समाज सेवी क्षेत्र की तुलना में निजी क्षेत्र और शैक्षणिक और अनुसंधान विशेषज्ञ कमेटियों के साथ अधिक सहज देखा गया है। जहां प्रमुख ऐसिअन सदस्यों ने समाज सेवी क्षेत्रों के लिए अपने दरवाजे खोले, वही उनके अपने देशों में या क्षेत्रीय मंचों पर, अथवा व्यक्तिगत ऐसिअन सदस्य देशों में समाज सेवी क्षेत्रों की भागीदारी और संलग्नता का लगातार विरोध किया गया और हिचकिचाहट महसूस की गई। ‘‘जनसाधारण को किस प्रकार शामिल किया जाए यह राष्ट्रीय संदर्भ में एक प्रष्न बन गया’’। समाज सेवी क्षेत्रों के साथ न जुड़ने के लिए अनेक कारण दिए गए। इनमें से कुछ है – निर्वाचन क्षेत्रों का संदिग्ध प्रतिनिधित्वय विदेशी अनुदान निधियों की स्वीकृति के कारण विदेशी सरकारों/संस्थाओं के

मूल्यों और एजेंडे की स्वतंत्रता और प्रचार में कमीय विपक्षी दलों और एजेंडे के रूप में पहचान आदि और इसलिए इनकी मंषा और एजेंडा संदिग्ध है।

ऐसिअन में लोगों की भागीदारी, 'जन–उन्मुख ऐसिअन' प्रतिबद्धता और संयुक्त संघ में इसके अभ्यास की आशाये पूरी नहीं होती है, जिससे समाज सेवी क्षेत्र में उन लोगों को निराशा होती है जिन्होंने विभिन्न स्तरों पर ऐसिअन को चुना था। समाज सेवी क्षेत्र की भागीदारी के लिए ऐसिअन में स्वतंत्रता अनिवार्य है। लेकिन ऐसिअन की प्रतिबद्धता का स्तर केवल बयानबाजी के स्तर तक ही सीमित है, हालाँकि यह इरादतन नहीं है, किन्तु इस तथ्य के कारण लोगों की भागीदारी को सुविधाजनक बनाने के लिए सक्षम वातावरण मौजूद नहीं है। (9)

निष्कर्ष

यह देखते हुए कि गतिविधियों और प्रतिबद्धताओं की एक विस्तृत श्रृंखला क्वाड के दायरे में आती है, यह वास्तव में मजबूत एवं महत्वपूर्ण मंच के रूप में उभर रहा है, खासकर महामारी के बाद की दुनिया में। वैश्विक स्वास्थ्य से लेकर जलवायु परिवर्तन तक तथा साइबर सुरक्षा से लेकर उत्तम शिक्षा तक क्वाड यह सब क्षेत्रों में मौजूद है। यह उन कुछ प्रमुख चुनौतियों के लिए भी प्रतिबद्ध है जिनका मुकाबला करने का प्रयास भारतीय समाज सेवी क्षेत्र पिछले काफी समय से कर रहा है। हालांकि साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष और सैन्य गतिविधियों के मुद्दों के लिए समाज सेवी क्षेत्र अच्छी पहल नहीं हो सकता, लेकिन यह निश्चित रूप से स्वास्थ्य एवं कल्याण, वैक्सीन तक समान पहुंच, उत्तम शिक्षा, युवा कौषल विकास से संबंधित अन्य क्वाड क्षेत्रों के केंद्र और भागीदारी के दायरे का मूल्यांकन कर सकता है।

देश के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने के लिए, सरकार आमतौर पर विभिन्न बहुपक्षीय मंचों पर अपनी राय देती है। इसी तरह, भारत सरकार ने भी अन्य क्वाड देशों के साथ उन मुद्दों पर बातचीत की है जो सभी के लिए समान हैं और उन्हें संभालने के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता है। भारत ने अतीत में ऐसे तीन परामर्श किए हैं, एक 2017 में और दो 2018 में।

इन अंतर्राष्ट्रीय संवादों के परिणामस्वरूप, कुछ सामान्य हित क्षेत्र उभर कर सामने आए, जो इंडो पैसिफिक क्षेत्रो और अन्य क्षेत्रों में संपर्क के विकास, दीर्घकालीन विकास लक्ष्यों की प्राप्ति, आतंकवाद का मुकाबला, परमाणु प्रसार निषेध, समुद्री सुरक्षा और साइबर सुरक्षा, शांति, अहिंसा और स्थिरता बनाए रखना आदि है।

जैसा कि 2030 एजेंडा से मान्य है, समाज सेवी क्षेत्र समुदायों के साथ उनके व्यापक संपर्क द्वारा एसडीजी के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाज सेवी क्षेत्र जागरूकता निर्माण और संघटन, एसडीजी सम्बंधित क्षमता निर्माण, समुदायों के सहयोग से परियोजना डिजाइन और उनका कार्यान्वयन, शोध–आधारित नीतिगत सुझाव, डेटा संग्रह और सरकारी वादों के लिए जवाबदेही में संलग्न है।

समाज सेवी क्षेत्र की सलग्नता का दायरा

इस क्षेत्र की भूमिका का मूल्यांकन इसकी समान समूहों के साथ संलग्नता और उन कमियों से किया जा सकता है जिन्होंने इनके अनुभवों को क्षीण किया है। इसलिए, समाज सेवी क्षेत्र निम्नलिखित भूमिकाएँ निभाने में लाभदायक सिद्ध हो सकता है:

ज्ञान और सूचना साझा करना: इंडो पैसिफिक क्षेत्र में क्वाड के अस्तित्व की समझ और जागरूकता की स्पष्ट कमी है, और नेटवर्किंग प्रयासों में भी काफी अंतराल है। चूँकि, एक दूसरे तक पहुँच आसान नहीं है, इसलिए सदस्य देशों के विभिन्न संस्थानों/निकायों में सूचना और ज्ञान के आदान–प्रदान की कमी है, जिसे अपेक्षित परिणामों और उपलब्धियो में वृद्धि पूर्ण करने की आवश्यकता है। क्षमता निर्माण और नेटवर्किंग में उनकी विशेषज्ञता को ध्यान में रखते हुए समाज सेवी क्षेत्र द्वारा इस भूमिका को अच्छी तरह से निभाया जा सकता है।

अनुसंधान और दस्तावेजीकरण: पिछले अनुभवों से सीखना और उनके आधार पर प्रयासों को आगे बढ़ाना हमेशा एक अच्छा अभ्यास होता है। सीएसओ, अनुसंधान अध्ययन करने में अपने विशाल अनुभव के कारण, क्वाड के प्रयासों का निरिक्षण और अच्छी प्रथाओं का एक डेटाबेस बनाने तथा समूह की अपर्याप्तताओं को उजागर करने में लाभकारी साबित हो सकते हैं। इस प्रकार के शोध अध्ययन क्वाड देशों द्वारा किए गए प्रयासों को और विकसित करेंगे। समाज सेवी क्षेत्र के साथ जुड़ने से जमीनी स्तर पर अधिक इनपुट और डेटा प्राप्त होंगे जो सरकारों को आसानी से उपलब्ध नहीं होते हैं।

संकट में सबसे पहले प्रतिक्रिया देने वाले: समाज सेवी क्षेत्र संकट में प्रतिक्रिया और दूरस्थ क्षेत्रों में सेवाएं प्रदान करने वाला प्रथम जन रहा है। यह जरूरतमंद लोगों, स्थानीय समुदायों तथा जमीनी स्तर के मुद्दों का सम्बोधन करता है एवं समुदायों से निकटता को ध्यान में रखते हुए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इस प्रकार सरकारो के मुकाबले इनकी स्थिति बेहतर है। समाज सेवी क्षेत्र की यह विशेषता निश्चित रूप से समस्या की स्थिति में तथा सरकारों के लिए सहयोगी साबित होगी।

इसलिए यह स्पष्ट है कि क्वाड के एजेंडे को आगे बढ़ाने में समाज सेवी क्षेत्र का योगदान और संलग्नता एक महत्वपूर्ण तत्व साबित हो सकता है। इसलिए, क्वाड को समाज सेवी संस्थान को इस प्रक्रिया में शामिल करने का प्रयास करना चाहिए और उनके प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए उनसे इनपुट लेना चाहिए। समाज सेवी क्षेत्र को अर्थपूर्ण बनाने और फोकस क्षेत्रों में क्वाड के प्रयासों को पुनः स्थापित करने, वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने और बेहतर प्रक्रिया के लिए सहमति आवश्यक है। इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में प्रत्येक क्वाड देश पारस्परिक हित में योगदान करने के लिए जिम्मेदार है, और निश्चित रूप से संबंधित देशों के समाज सेवी क्षेत्रों को स्वा. मित्व, स्वतंत्र तथा समावेशी स्थान प्रदान करने की प्रक्रिया में उनका योगदान अनिवार्य है ।

संदर्भ:

1) https://timesofindia.indiatimes.com/blogs/truth-lies-and-politics/quad-its-significance-for-india/

2) https://www.csis.org/analysis/defining-diamond-past-present-and-future-quadrilateral-security-dialogue

3) https://www.whitehouse.gov/briefing-room/statements-releases/2021/03/12/quad-leaders-joint-statement-the-spirit-of-the-quad/

4) https://www.whitehouse.gov/briefing-room/statements-releases/2021/09/24/fact-sheet-quad-leaders-summit/

5) https://timesofindia.indiatimes.com/blogs/truth-lies-and-politics/quad-its-significance-for-india/

6) https://www.airuniversity.af.edu/JIPA/Display/Article/2528182/the-quad-factor-in-the-indo-pacific-and-the-role-of-india/

7) https://www.orfonline.org/research/india-and-the-quad/

8) https://th.boell.org/en/2017/07/12/new-perspectives-civil-society-engagement-asean

9) https://dvov.org/wp-content/uploads/2019/01/FULL-PAPER-ACSC-APF-Ten-Year-Review-2005-2015.pdf

HEINRICH BÖLL STIFTUNG
INDIA

www.boell.de, www.in.boell.org

हेनरिक बॉल स्टिफतुंग के बारे में

हेनरिक बॉल स्टिफतुंग एक जर्मन संगठन और हरित आंदोलन का हिस्सा है जो दुनिया भर में समाजवाद, उदारवाद और रूढ़िवाद की पारंपरिक राजनीति की प्रतिक्रिया के रूप में विकसित हुआ है। हम एक ग्रीन थिंक–टैंक और एक अंतरराष्ट्रीय नीति नेटवर्क हैं, हमारे मुख्य सिद्धांत पारिस्थितिकी और स्थिरता, लो. कतंत्र और मानवाधिकार, आत्मनिर्णय और न्याय हैं। हम लैंगिक लोकतंत्र पर विशेष जोर देते हैं, जिसका अर्थ है सामाजिक मुक्ति और महिलाओं और पुरुषों के लिए समान अधिकार। हम सांस्कृतिक और जातीय अल्पसंख्यकों के समान अधिकारों के लिए भी प्रतिबद्ध हैं। अंत में, हम अहिंसा और सक्रिय शांति नीतियों को बढ़ावा देते हैं। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, हम उन अन्य लोगों के साथ रणनीतिक साझेदारी चाहते हैं जो हमारे मूल्यों को साझा करते हैं। हमारे उपनाम, हेनरिक बॉल, उन मूल्यों को व्यक्त करते हैं जिनके लिए हम खड़े हैं: स्वतंत्रता की सुरक्षा, नागरिक साहस, सहिष्णुता, खुली बहस, और विचार और कार्रवाई के स्वतंत्र क्षेत्रों के रूप में कला और संस्कृति का मूल्यांकन। हमारा भारत संपर्क कार्यालय 2002 में नई दिल्ली में स्थापित किया गया था।

VANI
Celebrating 30 Years
VOICE OF THE VOLUNTARY SECTOR

www.vaniindia.org

वाणी के बारे में

एक मंच के रूप में, वाणी स्वैच्छिकवाद को बढ़ावा देती है और स्वैच्छिक कार्रवाई के लिए जगह बनाती है। एक नेटवर्क के रूप में, यह देश में स्वैच्छिक कार्रवाई के वास्तविक राष्ट्रीय एजेंडे के निर्माण के लिए सामान्य क्षेत्रीय मुद्दों और चिंताओं के अभिसरण को लाने का प्रयास करता है। यह स्वैच्छिक क्षेत्र के विभिन्न प्रयासों और पहलों के लिंकेज को भी सुगम बनाता है।

अस्वीकरण: यह प्रकाशन हेनरिक बॉल स्टिफ्टंग के सहयोग से तैयार किया गया था। प्रकाशन में निहित विचार और विश्लेषण लेखक(कों) के हैं और जरूरी नहीं कि वे फाउंडेशन के विचारों का प्रतिनिधित्व करते हों।